

## बन्धन और मोक्ष ( जैन दर्शन )

TDC-I. & Sub.

डॉ. विजय कुमार

दर्शनशास्त्र विभाग

एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

बन्धन परतंत्रता है तथा मोक्ष स्वतंत्रता है। बन्धन और मोक्ष जीव को होता है अजीव को नहीं। क्योंकि जिसमें चेतना होगी उसे ही सुख-दुःख या बन्धन-मोक्ष का अनुभव होगा। जीव स्वभावतः स्वतंत्र एवं अनन्त चतुष्टय अर्थात् अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त आनन्द और अनन्त शक्ति (वीर्य) से युक्त होता है। किन्तु कर्मों के संयोग से उसे बन्धन की प्राप्ति होती है। बन्धन और मोक्ष की स्थितियाँ जीव के लिए उसी प्रकार है जिस प्रकार सूर्य का बादलों से ढक जाना। सूर्य स्वप्रकाशित एवं परप्रकाशक है, किन्तु जब वह बादलों से ढक जाता है तो उसका प्रकाश लुप्त हो जाता है। पुनः जब बादल हट जाते हैं तो वह अपने सहज रूप में प्रतिभाषित होता है। जिस समय वह बादलों से ढका रहता है उस समय उसका प्रकाश मात्र ढक जाता है नष्ट नहीं होता। ठीक इसी प्रकार जीव जब कर्म रूपी बादलों से ढक जाता है तब उसका स्वाभाविक रूप मेघाच्छादित सूर्य की तरह छुप जाता है। उसका अनन्त चतुष्टय रूप नष्ट नहीं होता बल्कि कर्मों से आच्छादित हो जाता है। पुनः जब कर्म के आवरण नष्ट हो जाते हैं, जीव कर्मों से छूट जाता है तब वह अपने सहज एवं स्वाभाविक रूप में अपने को प्रस्तुत करता है।

इतना तो स्पष्ट है कि जैन दर्शन के अनुसार जीव का कर्मों के सम्पर्क में आना उसका बन्धन है और कर्मों से सम्बन्ध विच्छेद हो जाना मोक्ष है। किन्तु इस कर्म-सम्पर्क और कर्म-विच्छेद की प्रक्रिया के अन्तर्गत चार स्थल आते हैं- आस्रव, बन्ध, संवर और निर्जरा। इन चार में से प्रथम दो बन्धन और बाद के दो मोक्ष से सम्बन्धित हैं। कर्मों का जीव के निकट आना आस्रव है, कर्मों का जीव से प्रभावित हो जाना बन्ध या बन्धन है, आते हुए कर्मों को जीव के द्वारा रोकना संवर है तथा आए हुए कर्मों को भोगना अथवा फलाभाव करना निर्जरा है। इसे हम एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं-

किसी व्यक्ति के घर के निकट एक गड्ढा है जिसमें पानी इकट्टा होता रहता है और पानी के सड़ जाने से दुर्गन्ध फैलती है। वह व्यक्ति दुर्गन्ध से मुक्त होना चाहता है। इसके लिए उसे क्या करना चाहिए?

१. गड्ढे में पानी आ रहा है
२. गड्ढे में सड़कर दुर्गन्ध फैला रहा है

३. आते हुए पानी को रोक दिया जाए ताकि गढ़े में पानी एकत्रित न हो तथा दुर्गन्ध पैदा न हो।
४. जितना पानी आ चुका है उसे बाहर फेंक दिया जाए अथवा धूप में सूख जाने के लिए छोड़ दिया जाए। यही चार स्थितियाँ आस्रव, बन्ध, संवर और निर्जरा की हैं। गढ़े में पानी का आना मानो कर्मों का जीव के पास आना (आस्रव), पानी का एकत्रित होना तथा सड़कर दुर्गन्ध फैलाना मानो जीव पर कर्मों के द्वारा अपना प्रभाव फैलाना (बन्ध), गढ़े में आते पानी को रोक देना ताकि पानी एकत्रित होकर दुर्गन्ध न फैला सके मानो जीव के द्वारा अपने सम्पर्क में आते हुए कर्मों को रोकना है ताकि कर्मों का प्रभाव बढ़े नहीं (संवर) और गढ़े में एकत्रित पानी को बाहर फेंक देना मानो जीव के पास आए हुए कर्मों को समाप्त करना (निर्जरा) है।

**आस्रव-** कर्म और जीव का सम्पर्क होना आस्रव कहलाता है। कर्म और जीव के सम्पर्क को बनाने वाला योग होता है। योग यानी मन, वचन और काया। जैन दर्शन में जीव को पौद्गलिक माना गया है तथा जीव चैतन्य होता है। ऐसी स्थिति में जीव का कर्म से सम्बन्ध होना संभव नहीं है किन्तु योग के कारण ही कर्म-पुद्गल जीव में प्रवेश कर पाते हैं। पाँच आस्रवद्वार हैं जिनसे कर्म जीव में प्रवेश करते हैं- मिथ्यात्व, विरति, प्रमाद, कषाय और योग।

**बन्ध-** कषाय के सम्पर्क से कर्म योग्य पुद्गलों को जीव ग्रहण करता है। क्रोध, मान माया लोभ; ये कषाय हैं। इनके कारण बन्ध में कर्म जीव को पूर्णतः प्रभावित कर देता है। जिससे जीव का स्वाभाविक रूप आच्छादित हो जाता है। बन्धन के भी वही कारण हैं जो आस्रव के हैं।

**संवर-** आस्रव का निरोध संवर है। यह दो प्रकार का होता है- भाव संवर और द्रव्य संवर। साधक जब उन नैतिक प्रयत्नों के लिए उत्सुक होता है जिससे नए कर्म रोके जाते हैं तो वे भाव संवर कहलाते हैं। जब नए कर्मों का आना बन्द हो जाता है तब उसे द्रव्य संवर कहते हैं। यहाँ से मोक्ष की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है।

**निर्जरा-** निर्जरा का अर्थ कर्म-क्षय और उससे होने वाली आत्म स्वरूप की उपलब्धि होती है। संवर में आते हुए कर्मों को रोका जाता है लेकिन जो कर्म आ गए होते हैं उन्हें फलरहित करना निर्जरा की स्थिति है। निर्जरा की स्थिति में साधक कैवल्य को प्राप्त कर सर्वज्ञ हो जाता है।

**मोक्ष-** मोक्ष पूर्ण मुक्ति की स्थिति है। निर्जरा की स्थिति में चार घातीय कर्मों का क्षय हो जाता है-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय एवं अन्तराय। आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय अघातीय कर्मों का क्षय नहीं होता। इसी कारण वह सदेहमुक्त की अवस्था में रहता है। जब इन चार अघातीय कर्मों का भी नाश हो जाता है और शरीर

का परित्याग हो जाता है तब पूर्ण मोक्ष की प्राप्ति होती है। किन्तु ऐसा नहीं है कि बन्धन से छुटकारा मिलते ही हठात जीव को मोक्ष की स्थिति में आ जाए, बल्कि जीव को मोक्ष की ओर विकास के सोपान हैं जिसे गुणस्थान कहते हैं। गुणस्थान चौदह हैं-

१. मिथ्यात्व, २. ग्रन्थि-भेद, ३. मिश्र, ४. अविरत सम्यक्-दृष्टि, ५. देश विरति, ६. प्रमत्तसंयत्त, ७. अप्रमत्तसंयत्त, ८. अपूर्वकरण, ९. अनिवृत्तिकरण, १०. सूक्ष्म-संपराय, ११. उपशान्त कषाय, १२. क्षीण कषाय, १३. सयोग केवली, १४. अयोग केवली।

### मोक्ष के उपाय

जैन दर्शन में कहा गया है कि- **सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।** अर्थात् सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान और सम्यक्-चारित्र मोक्ष के साधन हैं। जैन दर्शन में 'दर्शन' शब्द एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। दर्शन यानी श्रद्धा, विश्वास, आस्था आदि। ज्ञान अर्थात् विवेक। चारित्र यानी आचरण। किन्तु ये सब सम्यक् होंगे तभी जीव अध्यात्म और आत्मशुद्धि की ओर अग्रसर होकर मोक्ष की ओर प्रस्थान कर सकता है।

